एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 03 (मई-जून, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

मक्का में फॉल आर्मीवर्म कीट का नियंत्रण

(*भवानी सिंह मीना[1], मोनिका मीणा[1], मनीषा मीणा[2], पूजा शर्मा[1] एवं बलवन्त सिंह राठौड़[1])
[1]श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर
[2]महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर
*125bhawanisingh@gmail.com

फॉल आर्मीवर्म कीट का प्रकोप मेवाड़ संभाग में मक्का की फसल में देखा गया है। यह कीट कुल 80 से 100 पादप जातियों को अपने भोजन के रूप में खाता है परन्त मुख्यतया यह मक्का की फसल को ही नुकसान पहुँचाता है तथा दुसरी फसलों में गन्ना, धान, ज्वार, कपास, सब्जियाँ तथा जंगली पौधे आदि प्रमुख पोषक पौधे है। अर्थात इस कीट को बहुभक्षी कीट की श्रेणी में जाना जाता है।

कीट की पहचान

छोटी अवस्था में (तीसरी अवस्था तक) इसके लार्वा को पहचानना मुश्किल है लेकिन जैसे–जैसे बड़ा होता है, इसकी पहचान आसानी से हो जाती है। इसके सर पर उलटी वाई (λ) का निशान देखा जा सकता है। इसके साथ ही लार्वे के 8 वें बॉडी सेगमेंट पर 4 बिंदु (वर्गाकार आकृति में) पाये जाते हैं जो साफा–साफ दिखाई देते है। इसके नर वयस्क (मोथ) के अगले पंखों के मध्य में सफेद रंग की त्रिभुजाकार आकृति होती है एवं बाहर की तरफ सफेद रंग की पट्टी पाई जाती है।

जीवन चक्र –

इसकी मादा वयस्क 50–200 तक अंडे एक गुच्छे में देती है और उन्हें ढंक देती है। मादा अपने जीवन काल में (7–21 दिन) ऐसे 10 गुच्छे तक दे सकती है यानि मादा द्वारा 1700–2000 अंडे देने की क्षमता होती है। यह अंडे 3–4 दिन में फुट जाते है जिनसे लार्वा निकलते है। लट अवस्था 14–22 दिन होता है। प्यूपा अवस्था 7–13 दिन का होता है। इस कीट का जीवन चक्र 30–61 दिन का होता है और वर्ष में कई पीढ़ियाँ पाई जाती है।

फसल पर नुकसान की पहचान –

इस कीट की नवजात सूण्डी मक्का के पौधे के तने में छेद करके अन्दर घुस जाती है जैसे–जैसे पौधा बड़ा होता जाता है, जैसे–जैसे पौधा बड़ा होता जाता है पत्तियों पर एक पंक्ति में कुछ छेद दिखाई देते है, जो की इसके शुरूआती लक्षण के तौर पर देखे गये है। सुण्डी जब पौधे की छोटी अवस्था में आक्रमण करती है, तो पौधों की बढ़वार बिन्दु को मार देती है। जिससे पौधे की नई पत्तियों एवं भुट्टा नहीं बन पाते है। जैसे–जैसे सुण्डी बड़ी होती जाती है, पौधे के अन्दर के भाग को खाती रहती है। जिससे पत्तियाँ कटी–फटी दिखाई देती हैं, तथा जिस जगह सूण्डी खाती है उस जगह बहुत सारी विष्टा एकत्रित हो जाती है जो इस कीट से ग्रसित पौधों की पहचान का लक्षण है। खेत में सूण्डियों की संख्या बढ़ जाने पर यह मक्का के भुट्टों में छेद कर दानों को खा जाती है। अधिक आक्रमण के कारण पौधा छोटा रह जाता है, जिससे मक्का के उत्पादन में कमी हो जाती है।

नियंत्रण –

- मक्का की अगेती बुवाई करना सबसे कारगर उपाय है।
- मक्का के बाद मक्का की बुवाई नहीं करें।
- प्यूपा से वयस्क बनने को रोकने के लिये खेत में नीम की खली 250 किलोग्राम प्रति हैक्टर डालें।
- प्रकाश पाश (1 प्रति हैक्टर) लगाकर इसके मोथ पर नजर रखें।
- अंडों के गुच्छे ढूँढ कर नष्ट करें।

निम्न में से किसी एक कीटनाशी का छिड़काव करें –

क्लोरन्थ्रनिलीप्रोल 18.5 एस.सी. 0.3 मिली लीटर प्रति लीटर पानी या थ्रायोमिथोक्साम 12.6 + लेम्डा साईहैलोथ्रीन 9.5 प्रतिशत 0.5 मिली लीटर प्रति लीटर पानी या स्पाईनिटोरम 11.7 एस.सी. 0.5 मिली लीटर प्रति लीटर पानी।